भाषा और साक्षरता के लिए जोड़ी में कार्य

भारत में विद्यालय आधारित
समर्थन के माध्यम से
शिक्षक शिक्षा
www.TESS-India.edu.in

http://creativecommons.org/licenses/

संदेश

शिक्षकों को बाल केंन्द्रित कक्षा अभ्यास की ओर उन्मुख करने तथा शिक्षक प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के उद्देश्यों को सम्मुख रखते हुए TESS-India राष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत है। इस दिशा में TESS-India द्वारा मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Educational Resources) का विकास किया गया है । ये संसाधन शिक्षकों तथा शिक्षक–प्रशिक्षकों के वृत्ति विकास (Professional development) में लाभकारी एवं उपयोगी सिद्ध होंगे। राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार के नेतृत्व में इन संसाधनों का स्थानीयकृत किया गया है, जिसके अन्तर्गत इनके उद्देश्य के मूल को बरकरार रखते हुए इनमें स्थानीय, भाषा, बोली, प्रथाओं, संस्कृतियों तथा नियमों को सम्मिलित किया गया है। इनका उपयोग शिक्षण कार्य में सहजता एवं सुगमता पूर्वक किया जा सकता है ।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार के मार्गदर्शन में TESS-India द्वारा स्थानीय भाषा में तैयार मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Educational Resources) नेट पर आप सभी के लिए सुलभ उपलब्ध है ।

शुभकामनाओं सहित ।

(डॉ0 मुरली मनोहर सिंह)
निदेशक
एस0सी0ई0आर0टी0, बिहार

समीक्षा एवं दिशाबोध
डॉ. मुरली मनोहर सिंह, निदेशक राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. सैयद अब्दुल मोईन, विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. क़ासिम खुर्शीद, विभागाध्यक्ष, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
डॉ. इम्तियाज़ आलम, विभागाध्यक्ष, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. स्नेहाशीष दास राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. अर्चना, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
डॉ. रीता राय, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
श्री तेज नारायण प्रसाद, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

स्थानीयकरण
भाषा और शिक्षा
डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी, प्राचार्य, मैत्रेय कॉलेज ऑफ एडुकेशन एण्ड मैनेजमेंट, हाजीपुर, वैशाली
श्री सुमन सिंह, प्रखंड साधनसेवी, भगवानपुर हाट, सिवान
श्री कात्यायान कुमार त्रिपाठी, प्राथमिक विद्यालय चैलीटाल, पटना
श्री कृत प्रसाद, प्रखंड साधनसेवी, हिलसा, नालंदा
प्राथमिक अंग्रेज़ी
श्री अरशद रज़ा, सहायक शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय, पचासा रहुई, नालंदा
श्री संतोष सुमन, सहायक शिक्षक, बालिका उच्च विद्यालय, महुआबाग
श्री शशि भूषण पाण्डेय, सहायक शिक्षक, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, मुकुन्दपुर, नालंदा
श्रीमती रचना त्रिवेदी, शिक्षिका, नोट्रेडेम अकादमी, पटना
माध्यमिक अंग्रेज़ी
श्री मणिशंकर, प्रधानाध्यापक, तारामणी भगवानसाव उच्च माध्यमिक विद्यालय, कोइलवर, भोजपुर
डॉ. ब्रजेश कुमार, शिक्षक, पी. एन. एंग्लो संस्कृत माध्यमिक विद्यालय, नया टोला, पटना
प्राथमिक गणित
श्री कृष्ण कान्त ठाकुर
श्री दिलीप कुमार, संकुल संसाधन केन्द्र समन्वयक, बुलनी हैदरपुर, नालंदा
श्री गोविन्द प्रसाद, प्रखंड साधनसेवी, चनपटिया, पश्चिमी चम्पारण
माध्यमिक गणित
डॉ. राकेश कुमार, भागलपुर डायट
श्री रिज़वान रिज़वी, उत्क्रमित मध्य विद्यालय, सिलौटा चाँद, कैमूर
श्री इन्द्रभूषण कुमार, शिक्षक, सहयोगी माध्यमिक विद्यालय, हाजीपुर, वैशाली
प्राथमिक विज्ञान
श्री मनोज त्रिपाठी, प्रखंड साधनसेवी, बरहारा, भोजपुर
श्री शशिकान्त शर्मा, प्रखंड साधनसेवी, आरा, भोजपुर
श्री रणबीर सिंह, संकुल संसाधन केन्द्र समन्वयक, आदर्श आवासीय मध्य विद्यालय शिक्षक संघ, सहरसा
माध्यमिक विज्ञान
श्री जी.वी.एस.आर प्रसाद
श्री मुकुल कुमार, शिक्षक, सहायक शिक्षक, गोरखनाथ सूर्यदेव माध्यमिक विद्यालय, राजापाकर वैशाली

TESS-India (Teacher Education Through School Based Support)) का लक्ष्य है भारत में मुक्त शैक्षिक संसाधनों के द्वारा प्राथमिक और माध्यमिक स्तरों पर शिक्षकों के कक्षा अभ्यासों को बेहतर करना। ये संसाधन शिक्षकों के विद्यार्थी –केन्द्रित, भागीदारी दृष्टिकोण को विकसित करने में सहायता करेंगे।

TESS-India के मुक्त शैक्षिक संसाधन (Open Education Resources – OERs) शिक्षकों को स्कूल की पाठ्यपुस्तक के लिए सहायक पुस्तिका प्रदान करते हैं। ये संसाधन शिक्षकों के लिए गतिविधियाँ प्रदान करते हैं जो वे कक्षा में अपने थ्वद्यार्थियों के साथ कर सकते हैं। साथ ही इनमें केस स्टडी भी हैं जो ये दर्शाते हैं कि किस प्रकार दूसरे शिक्षकों ने उस विषय को सिखाया है। संबंधित संसाधन शिक्षकों को पाठ योजना बनाने में और विषय पर ज्ञान वर्धन करने में उनकी सहायता करते हैं।

TESS-India के मुक्त शैक्षिक संसाधन भारतीय पाठ्यक्रम और संदर्भों के अनुकूल हैं। ये *भारतीय तथा अतंर्राष्ट्रीय लेखकों के सहयोग से तैयार* किये गये हैं *और ये ऑनलाइन तथा प्रिंट उपयोग के लिए उपलब्ध है (http://www.tess-india.edu.in)* । मुक्त शैक्षिक संसाधन अनेकों संस्करणों में उपलब्ध हैं जो प्रत्येक राज्य के लिए उपयुक्त है जहाँ TESS India कार्यरत है। उपयोगकर्ता इन संसाधनों को अनुकूल और स्थानीयकृत करने के लिए स्वतंत्र हैं ताकि ये स्थानीय आवश्यकताओं और संदर्भों को पूरा कर सकें।

TESS-India मुक्त विश्वविद्यालय, ब्रिटेन के नेतृत्व में तथा ब्रिटेन की सरकार द्वारा वित्त- पोषित है।

वीडियो संसाधन

इस इकाई की कुछ गतिविधियों के साथ निम्न प्रतीक का उपयोग किया गया है: *. इससे संकेत मिलता है कि निर्दिष्ट अध्यापन संबंधी थीम के लिए TESS-India वीडियो संसाधनों को देखना आपके लिए उपयोगी होगा।*

TESS-India वीडियो संसाधन भारत में अनेक प्रकार की कक्षाओं के संदर्भ में मुख्य अध्यापन तकनीकों का वर्णन करते हैं। हमें आशा है कि वे आपको इसी प्रकार के अभ्यासों के साथ प्रयोग करने के लिए प्रेरित करेंगे। उनका उद्देश्य पाठ (टेक्स्ट) पर आधारित इकाइयों के माध्यम से काम करने के आपके अनुभव का पूरक होना और उसे बढ़ाना है।

TESS-India वीडियो संसाधनों को ऑनलाइन देखा या TESS-India की वेबसाइट, http://www.tess-india.edu.in/ से डाउनलोड किया जा सकता है। वैकल्पिक रूप से, आप ये वीडियो सीडी या मेमोरी कार्ड के माध्यम से भी देख सकते हैं।

संस्करण 2.0 LL13v1
Bihar

तृतीय पक्षों की सामग्रियों और अन्यथा कथित को छोड़कर, यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन- शेयरएलाइक लाइसेंस के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है.
http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/

TESS-India is led by The Open University UK and funded by UK aid from the UK government

यह इकाई किस बारे में है

यह अध्याय आपके भाषा के पाठों के दौरान जोड़ियों में काम करने की योजना बनाने और उसके प्रबंधन पर केंद्रित है। कई प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से सामाजिक, सहयोगपूर्ण अधिगम के अवसर प्रदान करने में, जोड़ियों में काम आपके सीखने–सिखाने के तरीकों के भंडार में से एक बेहद प्रभावी तरीका हो सकता है।

आप इस इकाई में सीख सकते हैं

- भाषा पाठों में जोड़ियों में काम करने की योजना बनाना व उसका प्रबंधन।
- कक्षा प्रबंधन तकनीकों के अपने भंडार का विस्तार कैसे करें।
- जोड़ियों में काम को अपने छात्र–छात्राओं के भाषायी व साक्षरता विकास के अवसर के रूप में कैसे उपयोग करें।

यह दृष्टिकोण क्यों महत्वपूर्ण है

दैनिक परिस्थितियों में, लोग एक-दूसरे के साथ काम करते हैं, बातें करते व सुनते हैं, देखते हैं, सहयोग करते हैं, सुझाव देते व मदद करते हैं। इस प्रकार के सहयोग से विचार-विमर्श को बढ़ावा मिलता है और काम करने के विभिन्न तरीके निकलते हैं। यदि कक्षा में सबकुछ शिक्षक पर ही केंद्रित रहेगा, तो छात्र–छात्राओं के सामान्य रूप से व परस्पर लाभकारी तरीकों से खोज, चर्चा, प्रश्न, प्रयोग व सीखने के अवसर बहुत कम रह जाएँगे। जोड़ियों में काम करना आपके भाषाई पाठों में इस प्रकार के बातचीत आधारित सीखने के अवसरों को जोड़ने का बहुत प्रभावी तरीका है।

जोड़े में कार्य करना सभी आयु वर्गों और विषयों के लिए उपयुक्त होता है। क्योंकि इसमें बहुत से छात्र एक साथ बात कर सकते हैं, इसलिए बड़ी कक्षाओं के लिए यह विशेष रूप से प्रभावी है। यह बेहद समावेशी है, क्योंकि इसमें सभी छात्र–छात्राओं को बातचीत करनी पड़ती है। यह विशेषकर बहुभाषी, बहु-स्तरीय कक्षाओं में उपयोगी है, क्योंकि आपके छात्र–छात्राओं की आवश्यकताओं के अनुसार लचीलेपन व सहयोग से जोड़ियाँ बनाई जा सकती हैं। चाहे आप समान दक्षता स्तरों, भिन्न दक्षता स्तरों, समान भाषा के कारण मित्रता आदि के आधार पर छात्र–छात्राओं को आपस में जोड़ते हैं या उन्हें किसी भी क्रम में बाँटते हैं, जोड़ी बनाने के तरीके का असर सीखने को प्रोत्साहित करने के साथ ही कक्षा में मित्रता को बढ़ावा देगा।

1 आपको जोड़ियों में काम करने का किस प्रकार उपयोग करना चाहिए?

गतिविधि 1 आपको अपने भाषाई पाठों के लिए जोड़ियों में काम करने पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

गतिविधि 1: कक्षा में जोड़ियों में काम करने पर विचार करना

यदि संभव हो तो एक सहकर्मी के साथ संसाधन 1, 'जोड़ियों में काम का उपयोग' पढ़ने से आरंभ करें। आप इस पाठ से शिक्षक के रूप में अपने लिए जिन्हें मुख्य शिक्षण बिंदु मानते हैं, उन्हें रेखांकित करें।

एक दो पाठों के बारे में सोचें जो आपने हाल में पढ़ाए हों। ये भाषा या किसी विशेष विषय पर केंद्रित हो सकते हैं।

- क्या इनमें जोड़ियों में काम करने के अवसर थे? अगर ऐसा था, तो वे कौन-कौन सी भाषाएँ थीं?
- क्या आपने अपने छात्र–छात्राओं से जोड़ियों में काम करवाने के लिए उनका उपयोग किया? यदि हाँ, तो वे कितने सफल रहे?
- यदि आप जोड़ियों में काम के लिए नए हैं, तो अपनी कक्षा के लिए इसे सतत प्रक्रिया बनाने मे आपकी क्या चिंताएँ हैं?

वीडियो: जोड़े में कार्य का उपयोग करना

2 जोड़ियों में काम के उदाहरण

इस पहली केस स्टडी में आप एक ऐसी शिक्षिका के बारे में पढ़ेंगे, जिन्होंने कविता लेखन की गतिविधि पर जोड़ी में काम का उपयोग किया।

केस स्टडी 1: कविता की कक्षा में जोड़ियों में काम

श्रीमती फातिमा पटना के बाहर एक छोटे विद्यालय में काम करती हैं। उनकी कक्षा आठवीं के छात्र–छात्राओं की क्षमताएँ कई स्तरों की हैं। यहाँ उन्होंने बताया है कि छात्र–छात्राओं की कविता लेखन में मदद के लिए उन्होंने जोड़ियों में काम का उपयोग कैसे किया।

मेरे छात्र–छात्रा गोपाल सिंह 'नेपाली' एवं सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताओं को अक्सर ज़ोर–ज़ोर से पढ़ते रहते थे। उन्होंने स्वयं भी कुछ कविताएँ लिखी थीं। इस बार मैंने तय किया कि उनसे जोड़ियों में कविता लेखन करवाया जाए।

मैंने एक ऐसा विषय चुना, जो उनके लिए प्रासंगिक था: 'मित्रों के साथ बहस'। मैंने पूरी कक्षा से कुछ प्रश्न पूछते हुए विषय का परिचय दिया। इनमें शामिल थे–

- 'पिछली बार तुम्हारी किसी मित्र से अनबन कब हुई थी?'
- 'वह कोई छोटी सी बहस थी या बड़ी?'
- 'उसके बाद तुम्हें कैसा महसूस हुआ?'
- 'क्या उस अनबन को हल कर लिया गया?'
- 'यदि हाँ, तो यह कैसे हुआ? इसमें कितना समय लगा'
- 'यदि नहीं, तो क्या तुम्हें अब भी इसके हल होने की उम्मीद है?'
- 'क्या तुम्हारी मित्रता अब भी पहले जैसी है?'

इस विषय पर बहुत चर्चा हुई, जिसमें कई छात्र–छात्राओं ने हिस्सा लिया। मैंने उनके द्वारा उपयोग किए गए कुछ शब्द व पद बोर्ड पर लिखे, जिससे वे अपने लेखन में इनका उपयोग कर सकें।

इसके बाद, मैंने उनसे कहा कि वे जोड़ियों में काम करने वाले हैं और उन्हें 'बहस' नाम की कविता लिखनी हैं। मैंने छात्र–छात्राओं से उनके पास बैठे छात्र के साथ काम करने को कहकर जोड़ियाँ बना दीं। मैंने समझाया कि उन्हें एक-एक करके कविता की पंक्तियाँ बनानी चाहिए और उन्हें लिखते जाना चाहिए। 30 मिनट बाद, मैंने प्रत्येक जोड़ी से एक छात्र को उनकी पूरी - या आधी - कविता पढ़ने को कहा।

एक जोड़ी द्वारा लिखी गई कविता यह थी:

'बहस'

मेरी मित्र सोनी से मेरी बहस हुई
हम मंदिर के पास थे जब उसने एक बूढ़े से बात कह दी कोई
वह था ग़रीब और कुछ गंदा–सा
लेकिन मेरी मित्र को उसपर न दया आई
मैंने कहा तुमने ठीक नहीं किया
उसने कहा इसकी उसे परवाह नहीं कोई

> लगा मुझे बूढ़े दादा के लिए बुरा
> चल पड़ा मैं उससे बिना बात किए कोई

मेरे छात्र–छात्राओं के द्वारा बनाई गई कविताएँ उन स्थितियों व भावनाओं के बारे में थीं, जिनका उन्होंने अनुभव किया था और जिन्हें वे समझते थे। जोड़ियों में बात करने से वे अपने विचारों को साझा कर सकें और यह सोच सकें कि उन्हें लेखन के माध्यम से कैसे प्रकट किया जाए।

जब मैं *'जोड़ियों में काम'* का उपयोग करता हूँ, तो मैं गतिविधि को बहुत कम अंतराल का रखता हूँ, जिससे मेरे छात्र इस बात पर अधिक ध्यान न दें कि उन्हें किसके साथ रखा गया है और दिए गए समय में काम को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित करें। लेकिन मैंने महसूस किया है कि वे जल्दी ही इस तरह कार्य करने के आदी हो गए हैं।

ज़रा सोचिये

- क्या आपको लगता है कि 'बहस' शीर्षक गतिविधि छात्र–छात्राओं के जोड़ियों में काम करने के लिए अच्छा चुनाव है? क्या इस गतिविधि के कोई नकारात्मक प्रभाव हैं?
- संसाधन 1 को पढ़कर क्या आपको लगता है कि श्रीमती फातिमा का पाठ समावेशी था? उन्हें कैसे पता लगता कि उनकी कक्षा के सभी छात्र–छात्राओं ने स्वयं को कक्षा में चर्चा व जोड़ी में लेखन की गतिविधि का हिस्सा महसूस किया?
- यदि आप यह पाठ पढ़ा रहे होते, तो लेखन गतिविधि के लिए जोड़ियाँ कैसे बनाते: छात्र–छात्राओं को उनके दक्षता स्तर समान या भिन्न होने के आधार पर, उनकी घरेलू भाषा समान है, वे मित्र हैं या नहीं, या यादृच्छिक रूप से? अपने चयन का आधार बताएँ।
- आप ऐसे छात्र–छात्राओं को इस गतिविधि में भाग लेने के लिए कैसे प्रोत्साहित करेंगे, जिन्हें कविता लिखने का आत्मविश्वास या उसमें रुचि नहीं है?

अगले केस स्टडी में, एक शिक्षक ने लेखन कार्य के समर्थन के लिए जोड़ियों में संवाद आयोजित किए हैं।

केस स्टडी 2: नेवला और कोबरा

सुश्री अंजू बिहार शरीफ़ के एक विद्यालय में पढ़ाती हैं। यहाँ वे जोड़ियों वाली गतिविधि के बारे में बता रही हैं, जो उन्होंने अपने वर्ग छह के छात्र–छात्राओं के साथ की थी।

मेरे छात्र–छात्रा स्थानीय जानवरों के बारे में सीख रहे थे। उन्हें पता था कि नेवले कीड़े, पक्षी, केंचुए, साँप, छपिकलियाँ व केकड़े खाते हैं। वे बहुत तेज़ होते हैं। उनकी मोटी चमड़ी उन्हें साँप के ज़हर से बचाती है। उन्हें पता था कि कोबरा अपनी गरदन को फैला कर फ़न काढ़ सकते हैं। ख़तरे में होने पर एक हिस्स की आवाज़ के साथ यह उनका चेतावनी देने का तरीका होता है। वे मुख्यत: अन्य साँपों, छोटे जानवरों और पक्षियों को खाते हैं।

मैंने इस विषय से जुड़े एक भाषाई पाठ की योजना बनाई। मैंने अपने छात्र–छात्राओं से पूछना शुरू किया कि उन्हें नेवले और कोबरा के दृष्टिगोचर होने और जीवन के बारे में क्या याद है। मेरे प्रश्नों में शामिल थे:

- 'वे कैसे दिखते हैं?'
- 'वे क्या खाते हैं?'
- 'एक दूसरे का सामने होने पर वे कैसी प्रतिक्रिया देंगे?'

मैंने बोर्ड पर मुख्य शब्द लिखे, जैसे 'तेज़', 'चमड़ी', 'चेतावनी' और 'ज़हर'। पाठ के पहले भाग में 15 मिनट लगे।

फिर मैंने अपने विद्यार्थियों को अपने पास बैठे साथी के साथ रोल प्ले करने को कहा। मैंने उनसे यह निर्णय करने को कहा कि उनमें से कौन नेवला था और कौन कोबरा, और यह सोचने को कहा कि यदि वे जंगल में मिलें तो एक-दूसरे से क्या कहेंगे। मैंने उन्हें दोनों जीवों के बीच एक संवाद लिखने के लिए 15 मिनट दिए, जिसमें वे चाहें तो विभिन्न आवाज़ों के साथ इशारों का उपयोग भी कर सकते हैं। कुछ छात्र–छात्राओं ने संवाद के लिए घर की भाषा का या घर व विद्यालय में उपयोग की भाषा का मिश्रित उपयोग किया। जब वे काम कर रहे थे, मैं उन्हें देख रही थी और उनके अनुरोध पर बोर्ड पर मुख्य शब्द लिखती रही। कई छात्र–छात्रा बहुत जोश में बात कर रहे थे।

चित्र 1: 'नेवला व कोबरा' गतिविधि में भाग लेना।

फिर मैंने उन्हें जोड़ियों को आगे आकर कक्षा के सामने अपनी भूमिका निभाने को कहा। मैंने कुछ शर्मीले किस्म के छात्र–छात्राओं को भी प्रोत्साहित करने की कोशिश की। अन्य छात्र–छात्राओं ने ध्यान से सुना व प्रत्येक प्रदर्शन पर तालियाँ बजाईं। जो एक संवाद उनकी घरेलू भाषाओं में से एक था मैंने उसे अंत में बाकी कक्षा को उसे विद्यालय की भाषा में अनुवाद

करने के लिए आमंत्रित किया। मैंने प्रस्तुतियों के लिए 30 मिनट का समय दिया।

समाप्त करने के लिए, मैंने छात्र–छात्राओं की जोड़ियों को अपने संवाद को अपनी अभ्यास पुस्तिकाओं में लिखने को कहा, यदि वे चाहें तो उनके चित्र भी बना सकते थे। मैंने उन्हें इस अंतिम कार्य के लिए 15 मिनट दिए।

ज़रा सोचिये

- क्या सुश्री अंजु द्वारा इस पाठ के विभिन्न भागों के लिए नियत समय आपके विद्यालय के संदर्भ में कारगर रहेगा? पाठ को दो लगातार दिनों में बाँटने के लिए आप समय को किस प्रकार संयोजित करेंगे?
- सुश्री अंजू किन दूसरे तरीकों से इस गतिविधि में घरेलू भाषा का उपयोग करने वाले छात्र–छात्राओं की मदद कर सकती थीं?
- नोट करें कि कैसे इस पाठ के प्रत्येक भाग ने सुश्री अंजू को अपने छात्र–छात्राओं के पर्यवेक्षण, मूल्यांकन व समर्थन का अवसर दिया। आपके अनुसार वे उनकी समीक्षा के दौरान क्या देख रही थीं?
- सुश्री अंजू ने बोलने व लिखने की गतिविधि में पढ़ने का चरण कैसे डाला होगा?

जोड़ियों में काम करना छात्र–छात्राओं के पर्यवेक्षण व उनके आकलन के कई अवसर देता है। पर्यवेक्षण में ये शामिल हो सकते हैं:

- कक्षा में घूमना, समीक्षा करना व सुनना
- यह जाँचना कि सभी ने निर्देश समझ लिए हैं व पसंदीदे तरीके से काम कर रहे हैं
- उन छात्र–छात्राओं के बारे में टिप्पणी लिखना जो अच्छे से सहयोग कर या नहीं कर पा रहे हैं
- शाबासी देना, समर्थन व प्रोत्साहन देना
- सामान्य त्रुटियों की पहचान करना।

चित्र 2: जोड़ियों में काम का पर्यवेक्षण।

आकलन छात्र–छात्राओं की भाषा के विकास से संबद्ध हो सकता है, जैसे उनके द्वारा:

- घरेलू या विद्यालय की भाषा में बोलते समय उपयुक्त शब्दावली व अभिव्यक्ति का उपयोग
- इसे लिखित रूप में अनुवाद करने की उनकी क्षमता
- जोड़ी में काम करने में दिए गए योगदान की प्रकृति
- कल्पना कर पाना
- अपने सहपाठियों के समक्ष उपलब्धि प्रदर्शन की क्षमता।

प्रमुख संसाधन 'प्रगति और कार्यप्रदर्शन का आकलन करना' आपकी कक्षा के छात्र–छात्राओं के आकलन के कुछ और तरीके बताता है।

वीडियो: प्रगति और कार्यप्रदर्शन का आकलन करना

3 जोड़ी में काम करने वाले सीखने की योजना बनाना

अब गतिविधि 2 का प्रयास करें।

गतिविधि 2: जोड़ी में काम करने वाले पाठ की योजना बनाना

इस गतिविधि में, आप एक पाठ की योजना बनाएँगे, जिसमें अधिकतम 20 मिनट जोड़ियों में काम करना होगा। संसाधन 1 के कार्य प्रकारों के उदाहरणों की समीक्षा करें:

- विचार करें–जोड़ा बनाएं–साझा करें
- जानकारी साझा करना
- सुनने जैसे कौशलों का अभ्यास करना
- निर्देशों का पालन करना
- कहानी सुनाना या रोल प्ले करना।

संसाधन 1 के विचारों व मार्गदर्शन का उपयोग करके और केस स्टडी 1 व 2 से सीख लेकर, एक ऐसे विषय का चयन करें, जिसके बारे में बात करने या लिखने में आपके छात्र–छात्राओं की रुचि जागृत हो। आप उसे कक्षा की भाषा व साक्षरता पुस्तक के किसी पाठ पर, समुदाय के किसी हाल की घटना पर या किसी स्थानीय या राष्ट्रीय समाचार पर आधारित रख सकते हैं। यह सोचें कि जोड़ियों में काम करने से पहले आपके छात्र–छात्रा प्रोत्साहन के लिए क्या पढ़ेंगे, या उसके बाद पढ़ने के क्या अवसर होंगे।

चित्र 3: जोड़ी में काम करने वाले पाठ की योजना बनाना।

आरंभ में अपनी कक्षा को सावधानी से तैयार करना महत्वपूर्ण है।

1. छात्र–छात्राओं को यह समझाएँ कि उन्हें जोड़ियों में बाँटने से पहले वे क्या करेंगे।
2. एक स्वयंसेवक के साथ यह प्रदर्शित करें कि उनसे क्या करने की अपेक्षा है।
3. कुछ छात्र–छात्राओं को बुलाकर उनकी समझ को जानने के लिए उनसे समझाने को कहें। यदि वे चाहें तो अपने घर की भाषा में व्यख्या कर सकते हैं।
4. जोड़ियों में बात करने के लिए धीमी आवाज़ सुनिश्चित करें। फिर भी, आपको कक्षा में कुछ शोर होने को स्वीकार करना चाहिए, जो आपके छात्र–छात्राओं के कार्य में लगे होने का लक्षण होगा।
5. गतिविधि के लिए स्पष्ट समय सीमा निर्धारित करें। अपने हाथों, या एक घंटी का संकेत नियत करें, जिससे यह इंगित हो कि अब छात्र–छात्राओं को रुक जाना चाहिए।
6. छात्र–छात्राओं की जोड़ियाँ बनाएँ। यह अग्रिम तौर पर कैसे करना है इस बारे में सोंचें, यह सुनिश्चित करें कि किसी जोड़ी में कोई भागीदार दूसरे के दबाव में न आए।
7. संभव हो तो इन जोड़ियों को कमरे के विभिन्न भागों में भेज दें, या कुछ को बाहर स्थान दें।
8. जो जोड़ियाँ काम जल्दी ख़त्म कर लें उनके लिए एक या दो अतिरिक्त गतिविधियाँ रखें।
9. काम करते समय अपने छात्र–छात्राओं पर ध्यान रखें, उनकी जोड़ियों में उनकी बात सुनें और अवलोकन करें व आवश्यक होने पर उनकी मदद करें।
10. कुछ छात्र–छात्राओं का चयन करके भविष्य के पाठों में अन्य छात्र–छात्राओं का मूल्यांकन करने के लक्ष्य के साथ इस गतिविधि के दौरान उनकी भाषा का मूल्यांकन करें।
11. अपनी कक्षा को फ़ीडबैक (प्रतिपुष्टि) देने का समय रखें और यदि उपयुक्त हो तो पाठ के अंत में या अगले दिन कुछ छात्र–छात्राओं को अपना काम दूसरों को दिखाने दें। अपने कार्य को प्रस्तुत करना व अन्य ने जो किया है वह सुनना, छात्र–छात्राओं को सीखने के अतिरिक्त और मूल्यवान अवसर देता है, जैसा कि एक-दूसरे के लिखित कार्य को पढ़ने से होता है।

गतिविधि 3: जोड़ियों में काम करने के लाभ और हानियाँ

अपनी जोड़ियों वाली गतिविधि को कर लेने के बाद, समीक्षा करें कि वह कैसी रही। यदि संभव हो तो अपने अनुभव के बारे में किसी सहकर्मी से बात करें। तालिका 1 के लागू होने वाले कथनों को चिह्नित करें और स्वयं अपने कथन जोड़ें।

तालिका 1: *जोड़ियों में काम करने के लाभ और हानियाँ*

जोड़ियों में काम करने के फ़ायदे		**जोड़ियों में काम करने में समस्याएँ**	
'पारंपरिक' पाठ की बजाय कक्षा में छात्र–छात्राओं को बोलने का अधिक समय देता है		छात्र–छात्रा जोड़ियों में काम करने के आदी नहीं होते व उन्हें इसके लिए काफ़ी मदद की आवश्यकता होती है	
सामाजिक रूप से शिक्षण व सहयोग को प्रोत्साहन मिलता है - इस संभावना के साथ कि एक-दूसरे को अच्छी तरह न जानने वाले छात्र–छात्राओं के बीच सकारात्मक संबंध बनेंगे।		जोड़ियाँ दिए गए कार्य के अलावा अन्य चीज़ों के बारे में भी बात कर सकती हैं।	
एक ही कार्य के लिए कई प्रकार के कल्पनाशील परिणामों को प्रोत्साहन मिलता है		शोर का उच्च स्वर।	
छात्र–छात्राओं के काम करते समय मैं उनका पर्यवेक्षण व मदद कर सकता/सकती हूँ		भागीदारों की हमेशा एक-दूसरे से नहीं बन पाती।	
		जोड़ियों का कार्य समाप्त करने का समय अलग-अलग होता है।	
		शिक्षक/शिक्षिका की ओर से बहुत अधिक एकाग्रता व निगरानी की आवश्यकता होती है।	

आपके सामने आई कुछ समस्याएँ अपने छात्र–छात्राओं को जोड़ियों में काम करने के लाभ संभवत: उनके घर की भाषा में समझाकर और उन्हें धीमे-धीमे इस प्रकार के कार्य से परिचित करवाकर कम की जा सकती हैं। प्रत्येक पाठ के पहले ऐसी जोड़ियाँ बनाएँ, जो सबसे अधिक सहयोगी हों उन्हें अपने प्रेक्षण का अनुसार बदलें जिससे कार्य करने के विभिन्न प्रतिमान रखे जा सकें। जोड़ियों में काम करने के बारे में आप अपने छात्र–छात्राओं के विचार - सकारात्मक व नकारात्मक - भी पूछ सकते हैं, लेकिन इस प्रकार की चर्चाओं को संवेदनशीलता के साथ संचालित करना महत्वपूर्ण है।

4 सारांश

यह अध्याय आपके भाषा के पाठों के दौरान जोड़ियों में काम करने की योजना बनाने और उसके प्रबंधन पर केंद्रित था। कई प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से सामाजिक, सहयोगपूर्ण प्रशिक्षण के अवसर प्रदान करने से, जोड़ियों में काम आपके सीखने–सिखाने के तरीकों के भंडार में से एक बेहद प्रभावी तरीका हो सकता है।

संसाधन

संसाधन 1: जोड़े में कार्य का उपयोग करना

लोग रोज़–रोज़ काम करते हैं, साथ-साथ दूसरों से बोलते हैं, उनकी बात सुनते हैं तथा देखते हैं कि वे क्या करते हैं और कैसे करते हैं। लोग इसी तरह से सीखते हैं। जब हम दूसरों से बात करते हैं, तो हमें नए विचारों और जानकारियों का पता चलता है। कक्षाओं में अगर सब कुछ शिक्षक पर केंद्रित होता है, तो अधिकतर छात्र–छात्राओं को अपने अधिगम को प्रदर्शित या परीक्षण करने या प्रश्न पूछने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिलता। कुछ छात्र–छात्रा केवल संक्षिप्त उत्तर दे सकते हैं और कुछ बिल्कुल ही नहीं बोल सकते। बड़ी कक्षाओं में, स्थिति और भी बदतर है, जहां बहुत कम छात्र–छात्रा ही कुछ बोलते हैं।

जोड़े में कार्य का उपयोग क्यों करें?

जोड़े में कार्य छात्र–छात्राओं के लिए ज्यादा बात करने और सीखने का एक स्वाभाविक तरीका है। यह उन्हें विचार करने और नए विचारों तथा भाषा को व्यवहार करने का अवसर देता है। यह छात्र–छात्राओं को नए कौशलों और संकल्पनाओं के माध्यम से काम करने और बड़ी कक्षाओं में भी अच्छा काम करने का सुविधाजनक तरीका प्रदान करता है।

जोड़े में कार्य करना सभी आयु वर्गों और लोगों के लिए उपयुक्त होता है। यह विशेष तौर पर बहुभाषी, बहुवर्गीय कक्षाओं में उपयोगी होता है, क्योंकि एक दूसरे की सहायता करने के लिए जोड़ों को बनाया जा सकता है। यह सर्वश्रेष्ठ तब काम करता है जब आप विशिष्ट कार्यों की योजना बनाते हैं और यह सुनिश्चित करने के लिए नियमित प्रक्रियाओं की स्थापना करते हैं कि सभी छात्र–छात्रा सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में शामिल हैं और प्रगति कर रहे हैं। एक बार इन नियमित प्रक्रियाओं को स्थापित करने के बाद, आपको पता लगेगा कि छात्र–छात्रा तुरंत जोड़ों में काम करने के अभ्यस्त हो जाते हैं और इस तरह सीखने में आनंद लेते हैं।

जोड़े में कार्य करने के लिए काम

आप शिक्षण के अभीष्ट परिणाम के आधार पर विभिन्न प्रकार के कामों का जोड़े में कार्य करने के लिए उपयोग कर सकते हैं। जोड़े में कार्य को अवश्य ही स्पष्ट और उपयुक्त होना चाहिए ताकि सीखने में अकेले काम करने के मुकाबले साथ मिलकर काम करने में अधिक मदद मिले। अपने विचारों के बारे में बात करके, आपके छात्र–छात्रा स्वतः को और विकसित करने के बारे में विचार करेंगे।

जोड़े में कार्य करने में शामिल हो सकते हैं:

- **'विचार करें-जोड़ी बनाए-साझा करें':** छात्र–छात्रा किसी समस्या या मुद्दे के बारे में खुद ही विचार करते हैं और फिर दूसरे छात्र–छात्राओं के साथ अपने उत्तर साझा करने से पूर्व संभावित उत्तर निकालने के लिए जोड़ों में कार्य करते हैं। इसका उपयोग वर्तनी, गणनाओं के जरिये कामकाज, वर्गों या क्रम में चीजों को रखने, विभिन्न दृष्टिकोण प्रदान करने, कहानी आदि का पात्र होने का अभिनय करने आदि के लिए किया जा सकता है।
- **जानकारी साझा करना:** आधी कक्षा को विषय के एक पहलू के बारे में जानकारी दी जाती है; और शेष आधी कक्षा को विषय के भिन्न पहलू के बारे में जानकारी दी जाती है। फिर वे समस्या का हल निकालने के लिए या निर्णय करने के लिए अपनी जानकारी को साझा करने के लिए जोड़ो में कार्य करते हैं।

- **सुनने जैसे कौशलों का अभ्यास करना:** एक छात्र कहानी पढ़ सकता है और दूसरा प्रश्न पूछता है; एक छात्र अंग्रेजी में पैसेज पढ़ सकता है, जबकि दूसरा इसे लिखने का प्रयास करता है; एक छात्र किसी तस्वीर या डायाग्राम का वर्णन कर सकता है जबकि दूसरा छात्र वर्णन के आधार पर इसे बनाने की कोशिश करता है।
- **निम्नलिखित निर्देश:** एक छात्र कार्य पूरा करने के लिए दूसरे छात्र हेतु निर्देश पढ़ सकता है।
- **कहानी सुनाना या भूमिका अदा करना:** छात्र–छात्रा जो भाषा सीख रहे हैं, उसमें कहानी या संवाद बनाने के लिए जोड़ों में कार्य कर सकते हैं।

सभी को शामिल करते हुए जोड़ों का प्रबंधन करना

जोड़े में कार्य करने का अर्थ सभी को काम में शामिल करना है। जोड़ों का प्रबंधन इस तरह से करना चाहिए कि हरेक को जानकारी हो कि उन्हें क्या करना है, वे क्या सीख रहे हैं और आपकी अपेक्षाएं क्या हैं। अपनी कक्षा में जोड़े में कार्य को नियमित बनाने के लिए, आपको निम्नलिखित काम करने होंगे:

- उन जोड़ों का प्रबंधन करना जिनमें छात्र–छात्रा काम करते हैं। कभी-कभी छात्र मैत्री जोड़ों में काम करेंगे; कभी यह सुनिश्चित करें कि उन्हें बोध है कि आप उनके सीखने की प्रक्रिया को अधिकतम करने में सहायता करने के लिए जोड़ें तय करेंगे।
- अधिकतम चुनौती पेश करने के लिए, कभी-कभी आप मिश्रित योग्यता वाले और भिन्न भाषायी छात्र–छात्राओं के जोड़े बना सकते हैं ताकि वे एक दूसरे की मदद कर सकें; किसी समय आप एक स्तर पर काम करने वाले छात्र–छात्राओं के जोड़े बना सकते हैं।
- रिकॉर्ड रखें ताकि आपको अपने छात्र–छात्राओं की योग्यताओं का पता हो और आप उसके अनुसार उनके जोड़े बना सकें।
- आरंभ में, छात्र–छात्राओं को पारिवारिक और सामुदायिक संदर्भों से उदाहरण लेकर, जहां लोग सहयोग करते हैं, जोड़े में काम करने के फायदे बताएं।
- आरंभिक कार्य को संक्षिप्त और स्पष्ट रखें।
- यह सुनिश्चित करने के लिए कि छात्र जोड़े ठीक वैसे ही काम कर रहे हैं जैसा आप चाहते हैं, उन पर नजर रखें।
- छात्र–छात्राओं को उनके जोड़े में उनकी भूमिकाएं या जिम्मेदारियां प्रदान करें, जैसे कि किसी कहानी से दो पात्र, या साधारण लेबल जैसे '1' और '2', या 'क' और 'ख')। यह कार्य उनके एक दूसरे का सामना करने से पूर्व करें ताकि वे सुनें।
- सुनिश्चित करें कि छात्र एक दूसरे के सामने बैठने के लिए आसानी से मुड़ या घूम सकें।

जोड़े में कार्य के दौरान, छात्र–छात्राओं को बताएं कि उनके पास प्रत्येक काम के लिए कितना समय है और उनकी नियमित जांच करते रहें। उन जोड़ों की प्रशंसा करें जो एक दूसरे की मदद करते हैं और काम पर बने रहते हैं। जोड़ों को आराम से बैठने और अपने खुद के हल ढूंढने का समय दें – छात्र–छात्राओं को विचार करने और अपनी योग्यता दिखाने से पूर्व ही जल्दी से उनके साथ शामिल होने का प्रलोभन हो सकता है। अधिकांश छात्र हरेक के बात करने और काम करने के वातावरण का आनंद लेते हैं। जब आप कक्षा में देखते हुए और सुनते हुए घूम रहे हों तो नोट बनाएं कि कौन से छात्र एक साथ आराम में हैं, हर उस छात्र के प्रति सचेत रहें जिसे शामिल नहीं किया गया है, और किसी भी सामान्य गलतियों, अच्छे विचारों या सारांश के बिंदुओं को नोट करें।

कार्य के समाप्त होने पर आपकी भूमिका उनके बीच की कड़ियां जोड़ने की है जिनको छात्र–छात्राओं ने बनाया है। आप कुछ जोड़ों का चुनाव उनका काम दिखाने के लिए कर सकते हैं, या आप उनके लिए इसका सार प्रस्तुत कर सकते हैं। छात्र–छात्राओं को एक साथ काम करने पर उपलब्धि की भावना का एहसास करना पसंद आता है। आपको हर जोड़े से रिपोर्ट लेने की जरूरत नहीं है – इसमें काफी समय लगेगा - लेकिन आप उन छात्र–छात्राओं का चयन करें जिनके बारे में आपको

अपने अवलोकन से पता है कि वे कुछ सकारात्मक योगदान करने में सक्षम होंगे और जिससे दूसरों को सीखने को मिलेगा। यह उन छात्र–छात्राओं के लिए एक अवसर हो सकता है जो आमतौर पर अपना विश्वास कायम करने हेतु योगदान करने में संकोच करते हैं।

यदि आपने छात्र–छात्राओं को हल करने के लिए समस्या दी है, तो आप कोई नमूना उत्तर भी दे सकते हैं और फिर उनसे जोड़ों में उत्तर में सुधार करने के संबंध में चर्चा करने के लिए कह सकते हैं। इससे अपने खुद के शिक्षण के बारे में विचार करने और अपनी गलतियों से सीखने में उनकी सहायता होगी।

यदि आप जोड़े में कार्य करने के लिए नए हैं, तो उन बदलावों के संबंध में नोट बनाना महत्वपूर्ण है जिन्हें आप कार्य, समयावधि या जोड़ों के निर्माण करना चाहते हैं। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि आप इसी तरह सीखेंगे और इसी तरह अपने अध्यापन में सुधार करेंगे। जोड़े में कार्य का सफल आयोजन करना स्पष्ट निर्देशों और उत्तम समय प्रबंधन के साथ-साथ संक्षिप्त सार संक्षेपण से जुड़ा है – यह सब अभ्यास से आता है।

अतिरिक्त संसाधन

- Some helpful websites referring to paired reading:
  - http://www.readingrockets.org/strategies/paired_reading
  - http://www.moray.gov.uk/moray_standard/page_62204.html
- Some helpful websites referring to paired work in the classroom:
  - http://www.teachingenglish.org.uk/language-assistant/primary-tips/working-pairs-groups

संदर्भ/संदर्भग्रंथ सूची

Glasner, E. and Mahmout, U. (2005) 'Putting paired learning into practice in the primary classroom' (online), University of Newcastle upon Tyne/Campaign for Learning. Available from: http://www.campaign-for-learning.org.uk/cfl/assets/documents/CaseStudies/L2L_cs_fleecefield_ph3.pdf (accessed 18 November 2014).

Jolliffe, W. (2007) *Cooperative Learning in the Classroom: Putting it into Practice*. London: Sage Publications.

अभिस्वीकृतियाँ

यह सामग्री क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन-शेयरएलाइक लाइसेंस (http://creativecommons.org/licenses/by-sa/3.0/) के अंतर्गत उपलब्ध कराई गई है, जब तक कि अन्यथा निर्धारित न किया गया हो। यह लाइसेंस TESS-India, OU और UKAID लोगो के उपयोग को वर्जित करता है, जिनका उपयोग केवल TESS-India परियोजना के भीतर अपरिवर्तित रूप से किया जा सकता है।

कॉपीराइट के स्वामियों से संपर्क करने का हर प्रयास किया गया है। यदि किसी को अनजाने में अनदेखा कर दिया गया है, तो पहला अवसर मिलते ही प्रकाशकों को आवश्यक व्यवस्थाएं करने में हर्ष होगा।

वीडियो (वीडियो स्टिल्स सहित): भारत भर के उन शिक्षक प्रशिक्षकों, प्रधानाध्यापकों, शिक्षकों और छात्र–छात्राओं के प्रति आभार प्रकट किया जाता है जिन्होंने उत्पादनों में दि ओपन यूनिवर्सिटी के साथ काम किया है।